^rhljh lnh b0i0 ls ÁFke bLoh rd Ákphu Hkkjrh; igukok ,o mudh fofo/krk dk fo'लेशणात्मक अध्ययन''

डॉ0 श्रीकृश्ण सिंह
,lkfl,V izkQslj&bfrgkl
ih-d-d- jktdh; egkfo|ky;
जलालाबाद, शाहजहाँपुर

प्राचीन भारतीय वेश–भूषा के अध्ययन के लिए हमें विविध साहित्यिक lk{;k d आधार पर एवं अन्य स्त्रोतों से उनके मूल विशेषताओं के बारे में जानकीरी प्राप्त होती है। इस युग में हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र, इण्डिका और महाभारत के कुछ अंशों से स्पष्ट lgk;rk feyrh gA ,frgkfld xFkk d v/;;u l Kkr gkrk g fd tkrd dFkkvk vkj विनय पिटक में वर्णित भारतीय वेश–भूषा में विविधता विद्यमान थी, परन्तु क्रमश : इस युग में dN vU; ckgjh igukvk d ckj e Hkh tkudkjh feyu yxuh gA Hkkjrh;k dk bl ;x e विदेशियों से काफी संपर्क हो गया था एवं इस समय तक बलख, तजाकिस्तान vkj phu आदि से विशेष संबंध परिलक्षित होते हैं।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अनेकों चमड़ों और समूरों का वर्णन मिलता है, ये समूर fgeky; l vkr Fk vkj ; bru dherh le> tkr Fk fd bUg jktHkMkj d jRuk rFkk lxf/kr n0;k d lkFk j[kk tkrk FkkA dkUrkukod[1] lej dk jx ekj dh xjnu dh rjg gjk gkrk FkkA i;d[2] ;g lQn vkj uhy jx dk gkrk Fkk vkj bl ij cnfd;k vkj धारियाँ पड़ी होती थीं। समूरों के नाम से पता चलता है कि शायद वे छोटे जानवरों के समूर jg gkA fcLh[3] bldk dkb [kkl jx ugh gkrk Fkk ;g ckynkj vkj fpÙkhnkj gkrk FkkA ; सभी समूर आरोह से आते थे जो हिमालय प्रदेश में स्थित था।[4] dnyh[5] ;g ,d idkj dk [kj[kjk lej nk gkFk pkMk vkj 24 vxy yEck gkrk FkkA egkHkkjr d vulkj dnyh ex d lej dky Hkj vkj yky jx d gkr FkA[6] शकुला इस पर गोल चित्तियाँ दिखायी iMrh g vkj bl e df.kdk, Hkh fn[kkb nrh gA[7]

वाल्हीक देश के समूर और चीनासि देश से आया हुआ समूर यह लाली लिए हुए dky vFkok dky jx dk gkrk FkkA[8] lkeyh bldk lej xg d jx dk gkrk Fkk bldh yEckb 36 vxy gkrh FkhA[9]

lejk d puko e dkfVY; d vulkj eyk;e fpdu vkj xfT>u lej lcls vPN gkr FkA[10]

अनेकों प्रकरण में अनेकों तरह के साधारण चमड़ों का उल्लेख अर्थशास्त्र में आया है ftue xkg] phrk] ll] flg] 0;k?k gkFkh] Hkslk ljkxk; d e[; FkA bl idkj bu peMk dk cgr l dkek e i;kx fd;k tkrk FkkA

आरंम्भ में भेड़ के ऊन से बने कंबल और शालों का वर्णन मिलता है। भेड़ के ऊन से बने शाल, सफेद गहरे लाल और मिश्रित लाल रंग के होते थे।[11] अलंकार और अर्थशास्त्र में शालों का वर्णन मुख्य रूप में मिलता है। शालों पर सुईकारी और अमलाकारी रीति से vydkj cuku d ckj e o.ku feyrk gA [kfpr dkjhxjk dk mYy[k feyrk gA[12] ;g सुईकारी और बुनाई से बना हुआ था, और यह कश्मीर की पुरानी शाल बिनने की पद्धति की vkj bfxr करता है। अर्थशास्त्र में शाल बिनने की पद्धति और आधुनिक साल बिनने की पद्धति एक जैसी ही है। कश्मीर में शाल बुनने के बारे में दो तरीके आज भी अपनाये जाते हैं, प्रथम तीली या कनीकार एवं अम्लीकार। तीलीकार में नक्काशियां करघे पर बुन ली जाती gA lbdkjh e cy cfV;k lb l dk<h tkrh gA bl idkj dh rduhd l vkt Hkh

शाल बनाये जाते हैं। सत्य यही है कि कश्मीरी शाल कनीकार और अम्लीकार के संयोग से ही बनते हैं। केवल एक ही पद्धति से बने शाल बहुत ही कम बनाये जाते हैं।[13] okufp= dj?k ij gh vydkj cuuk vFkkr okufp= vk/kfud fryh ;k duhdkj i)fr dk gh ikphu lLकृr uke gA[14] खंडसंघात्य इस प्रकार जुड़े हुए टुकड़ों से बना शाल बिने हुए अथवा काढ़े हुए टुकड़ों को जोड़कर बना हुआ शाल होता था।[15] ble 12 l 18 bp VdM ले लिए जाते हैं और उनपर नक्काशियाँ बुन दी tkrh g] vkj VdMk dk tkMdj ,d ijh नक्काशी का रूप दे दिया जाता है, इसमें किनारे की पट्टियां रेशम से बनी होती हैं। अमलीकार और तीलीकार शालों में इतनी समानता होती है कि इनमें से एक दूसरे को अलग djuk dfBu gkrk gA[16]

rrfofPNu fcuk cu fdukj को बाँधकर जाली बनाना इस प्रकार शाल को जालीदार झालर की ओर इशारा होता है।[17] vudk idkj d Åuh diMk dk mYy[k feyrk gA

कंबल तथा अन्य प्रकार के ऊनी कपड़े के लिए एक साधारण शब्द सामान्य तौर पर कंबल का ही प्रयोग होता था। 'केचलक' अर्थशास्त्र में केचलक शब्द का उल्लेख मिलता है शाम शास्त्री के अनुसार यह वस्त्र ग्वालों का कंबल था, शायद इनकी घोंघी बनाकर वे igur FkA[18] कलमितिका गणपति शास्त्री इसका अर्थ गजास्तरण से समीचीन करते है।[19] lkfefrdk l lEcfU/kr bl cy d ihB ij fcNku okyk ,d vkLrj.k l lEcfU/kत शामा शास्त्री ने माना है पर अन्य स्थान पर हाथी के हौदे पर बिछाने वाला आस्तरण भी माना जा ldrk gA[20] rjxkLrj.k ?kkM d thu ij fcNku okyk[21] o.kd d lEcU/k e bl lc/k dk vFk jxhu dcy l lEcfU/kr gkrk gA[22] ifjLrke bldk vfHkik; ,d cMk dcy l gA[23] समंतभद्रक शामा शास्त्री के अनुसार यह हाथी के पीठ पर डाला जाने वाला आस्तरण विशेष gkrk Fkk bl fofo/k idkj d dcy lkekU;rk HkM d cky l cuk, tkr Fk dkfVYi d vulkj vPN dcy fpdu] l{; vkj eyk;e gkr FkA[24]

uiky e cu Åuh diM ¼ fHkfxMlh ;g dcy vkB VdMk dk feykdj curk Fkk bldk jx dkyk gkrk Fkk vkj cjlkrh dh rjg dke djrk FkkA[25] txyh tkuojk d ckyk l cu g, diM dk mYy[k feyrk g gfju d ckyk vFkok ,l gh fdlh vU; tkuojk d cky l lEcfU/kr gA ikt kek] pknj] xPN vkfn d lc/k e Hkh mYy[k मिलता है 'संपुटिका' जंघों की रक्षा के लिए एक वस्त्र विशेष होता था, इस प्रकार ध्यान देने योग्य बात है कि पाजामे के लिए आज भी सुथना शब्द का प्रयोग होता है।[26] ^dVokud* गणपति शास्त्री के अनुसार मोटे सूत से बनी एक चादर है, जिसे देशी भाषा में भाष्यक कहते gA[27] सत्तलिका के संदर्भ में शामा शास्त्री इसका अर्थ कालीन से सम्बन्धित करते हैं, इस प्रकार यह विशेष प्रकार का रूईदार गद्दा है।[28] दुकूल, क्षौम, पत्रोर्ण, कैशेय तथा सूती कपड़े vkfn d lc/k e Hkh fofo/k lkfgR;k l tkudारी प्राप्त होती है। दुकूल वस्त्र यह वंग देश e ink gb :b fy, mi;kx e vku okyk oL= dk o.ku gA dgh&dgh bl o{kk d छालों अथवा रेशों से बना हुआ वस्त्र कहा जाता है।[29] ndy l diMk cxky e cuk;k tkrk Fkk ;g oL= lQn vkj eyk;e gkrk FkkA ndy dk fofHkUu rjhd l cuk;k tkrk FkkA

मणिस्निग्धोदकवान सर्व प्रथम सूत में नमी देकर उस पर छोटे से पालिश करते इसके पश्चाम् वस्त्र बुनते थे।

prjL=doku dh cukoV cjkcj gkrh Fkh vkj diMk fcuk fdlh jx dk gkrk FkkA व्यामिश्रवान सूत और रेशम मिलाकर बना दुdy bl idkj ;g jx fcjx lr feykdj बनाया हुआ दुकूल, क्षौम, काशी और पुंड्र क्षौम वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था।[30] vU; ckrk l Kkr gkrk g fd {kke] ndy dk gh ,d ?kfV;k idkj FkkA i=k.k l cu oL=k d uke भिन्न–भिन्न देशों के और प्रदेशों के नाम पर feyrk gA ex/k e cuk exf/kdk] iM e cuk

ikMjhd vkj lo.k e cuk lko.kdM;dk uke l lEckf/kr fd;k tkrk gA i=k.k] ukx] fydp] ody vkj oV o{kk dh Nkyk l cuk;k trk FkkA[31]

अर्थशास्त्र में दो प्रकार के रेशमी कपड़े का वर्णन है।[32] कौशेय, कौशकार देश में पैदा हुआ रेशमी वस्त्र, चीनपट्ट चीन देश में बना रेशमी कपड़ा सक सम्बन्धित है। सूती वस्त्र अर्थशास्त्र में सूती वस्त्रों का उल्लेख है। इन सूती वस्त्रों के नाम विभिन्न उत्पादन के विभिन्न dUnk d vk/kkj ij tkuk tkrk gA ek/kj ;g diMk ikM;k dh jkt/kkuh eFkjk ¼enjk½ e बनाया जाता था। अपरांतक आधुनिक कोकड़ में बना कपड़ा। कलिंगक कलिंग देश में बना diMk rfey lkfgR; e Hkh irk pyrk g fd dfyx d ukx cudj cgr vPNk diMk बनाते थे। काशिक काशि जनपद में बना सूती कपड़ा जातकों और बौद्ध साहित्; e काशिकवस्त्र के बहुत से उल्लेख मिलते हैं अर्थशास्त्र से प्रमाणित होता है कि काशी अपने क्षौम और सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। माहिषक महिषदेश का बना हुआ सूती कपड़ा ie[k FkkA[33]

इस प्रकार सभी वस्त्रों को सुरक्षित रखने के संबंध में अर्थशास्त्र में वर्णu feyrk g कि कपड़े कोषाध्यक्ष के अधिकार में रहते थे। कोषाध्यक्ष को भिन्न–भिन्न ऋतुओं और अवसरों ij igu tku oky diMk ,o dhM&edkM ,o pgk l mudh j{kk dk Kku gkuk vfuok; FkkA[34] diMk cuu dk dkj[kkuk l=k/;{k d vf/kdkj e gkrk og dkj[kku e vPN l= dkru oky oe cuku oky diM vkj jfL;k cuku oky dkjhxkj jgrk FkkA fo/kok,] अपाहिज लड़कियां, भिखमंगिने, वृद्धा, वेशयाएं, जुर्माना अदा करने के लिए काम करती स्त्रियां jktifjpkfjdk, rFkk nonkfl;k Åu] cyd] dikl] lu vkj {kke dkru d fy, j[kh tkrh FkhA[35] dkru oky dk ikfjJfed mud lr dk vPNkb ij fuHkj gkrk FkkA jkT; d dkj[kku cudjk d vykok diMk cuu dk dke vkj nlj cudjk dk Bd ij fu;r ikfjJfed vkj dkjhxj d vulkj fn;k tkrk FkkA dkjhxjk d mRlkg c<ku d fy, lxf/kr n0;] ekyk, rFkk cgr l migkj vkfn mUg inku fd, tkr FkA {kke] ndy] रेशम, पश्मीना और सूती कपड़े बिनने वाले को उत्साह स्वरूप उपहार देने का उल्लेख feyrk gA[36]

lrh ftjg c[rj cuku dk dke prj dkjhxjk d lin fd;k tkrk FkkA[37] tk fLत्रयां प्रातः काल सूत्रशाला में सूत लेकर हाजिर होती थी, उन्हें कताई की मजदूरी मिल tkrh FkhA dke dh etnjh u nu ij vFkok v/k cu dke dh etnjh nu ij l=k/;{k nM dk Hkkxh gkrk FkkA[38] tk fL=;k etnjh ydj Hkh dke ugh djuh Fkh mud vxB dkV fn, tkr Fk] eky elkyk ydj Hkkx tku okyk dk Hkh n.M fn;k tkrk FkkA[39] oL=k ij fofo/k idkj d pxh mud eY; d 1@20 l 1@25 rd gkrk FkkA[40] diM रंगने के लिए रंग, किशुक, कुसुंभ और कुमकुम से बनाया जाता था।[41] ek;dky e oL=k d uke mud ikfIr LFkku से पड़ जाते थे। परन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उल्लेख मिलता है कि वाह्य देश से कौन–कौन वस्त्र आते थे महाभारत के सभा पर्व में भी इस बात पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर भारतवर्ष के अनेक गणतंत्र और राजे और mld lhek ij बसने वाली जातियां उपहार लेकर आयी। इन उपहारों में उन प्रदेशों के बने हुए वस्त्र का भी वर्णन मिलता है, जिनसे पता चलता है कि ई0 पू0 में भारत में विदेशों से vPN l vPN diM vkr FkA Hkkjr] phu] vQxkfuLrku dk 0;kikfjd lc/k cgr ikphu dky l pyk vk jgk gA

ikphu dkt l vku oky oL= dkt dh igpku :i e fLFkr rkftfdLrku l dh tkrh gA ;gk l HkM d Åu vkj ykeMh d jk, l cu vkj lugy dke fd, g, वस्त्र ऊनी चादरें, चमड़े, दुशालें, कदलीमृग की खाल राजसूय यज्ञ में आयी।[42] सिंधु देश के

diM बलूचिस्तान के वंशिदे राजसूय यज्ञ में अपने देश से कंबल और बकरे भेड़ की खाले yk,A[43] चीन के बने वस्त्र नाप के अनुरूप खुशनुमा रंगवाले स्पर्श करने में मुलायम होते थे। भेड़ के ऊन, रेशम और पट्ट के बने कपड़े के आने का प्रमाण मिलता है।[44] phu d cu रेशमी कपड़े भारतीय चीनी रेशम के वस्त्र से भी अवगत थे। प्राचीन काल से चीन के रेशमी diM Hkkjr e vku d lEcU/k e o.ku feyrk gA

मध्य एशिया और अफगानिस्तान से नमदे कमल के रंग के हजारों ऊनी कपड़े, मुलायम रेशमी कपड़े तथा मेमनों की खाले आने का उल्लेख मिलrk gA[45] phuh peM vkj समूरो की ख्याति ईसा की पहली शताब्दी थी। पेरिप्लस के वर्णन के अनुसार सिंध नदी पर बाब्रिकन नाम के बंदरगाह से चीनी चमड़े और समूर नदी और समूर विदेश के देशों को भेजे tkr FkA[46] lyhuh d vulkj phu d jxhu peM dkQh dherh gkते थे और आराइश के dke e budk dkQh mi;kx gkrk FkkA[47] egkof.kt tkrd e mnnh;ku d cu dcy dkQh dherh eku x, gA[48] oreku le; e Hkh rkjoky e Bkddj fcu pVd jx oky कंबल सीमाप्रांत और पंजाब में स्वाती कंबल नाम से मशहूर है।[49] कौशिक प्राचीu dky l gh बंगाल में रेशम पैदा होने लगा था।[50] किष्किंघा काण्ड के बंगाली पाठ के अनुसार कोशकार देश लौहित्य नदी (ब्रहमपुत्र) के बाद पड़ता है इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कोशकार देश कहीं पूर्वी बंगाल या आसाम से संबंधित था।

पत्रोर्ण शब्द का वर्णन रेशमी ;k lrh diMk l lcf/kr ekuk tk ldrk gA vxj i=k.k dk vFk lrh diMk g rk ifjlyl d vulkj igyh lnh e xtfVd uke dh lcl vPNh eyey <kdk d vkl&ikl curh FkhA[51] कलिंग देश नाग बुनकर अपने बढ़िया diM d fy, ifl) Fk] mudh [;kfr bruh c<h gb Fii कि तमिल में कलिंग शब्द कपड़े dk i;k;okph cu x;k[52] ikoj dk i;kx niVV vFkok pknj d fy, fd;k tkrk FkkA lkph d ,d y[k l mYy[k feyrk g fd niVVk cpu okyk dk viuk Lor= 0;olk; gkrk FkkA

अर्थशास्त्र में अनेकों प्रकार के वस्त्रों का वर्णन मिलता g] lkFk gh lkFk ml le; की वेश–भूषा के संबंध में एवं उसके विविधता के संबंध में युनानी विवरणों से भी जानकारी feyrh gA ,fj;u d vulkj Hkkjrokl lrh diM iguuk iln djr Fk rFkk mudh /kkrh vk/k ij rd igprh FkhA[53] LVkcks d vulkj Hkkjrh; {kke vkj dikl l cu lQn diM igur FkA[54] स्ट्रोबों एक अन्य स्थान पर वर्णन करते है कि भारतीयों के कपड़े हमेशा lkn ugh gkr cfYd mud diM lugj dke oky jRutfVr Hkh gkr FkA bl idkj भारतीय वस्त्र विश्व प्रसिद्ध थे, जिनके वैविध्य और विशेषताओ से प्रभावित होकर विश्व के अन्य देशों में इसकी मांग भी अधिक होती थी।

lanHkZ vkj fVIi.kh %&

1- गणपति शास्त्री, अर्थशास्त्र 1, पृष्ठ 191 शामा शास्त्री अ-शा-i-
2- ogh
3- ogh
4- शा-शा- पृष्ठ 88
5- x- शा- 1] i- 191&92
6- egkHkkjr 2] 45] 19
7- x- शा- 1] i- 192

8- x- शा- 1] i- 192
9- प्रोफेसर नीलकंठ शास्त्री ने चीन और भारत के संबंध के उद्धरणों को भलीभांति tkpk g इस जॉज पड़ताल से अर्थशास्त्र के जिसमें चीन का उल्लेख है, समय पर प्रकाश पड़ता है।
10- ogh
11- x- शा- 1] i- 193, शा- शा- i- 89
12- ogh
13- tkt okV] bfM;u vkV ,V nygh 1903 i- 344 dydrk 1902
14- गणपति शा- 1] i- 193, शा- शा- i- 89
15- ogh
16- tkt okV] ogh i- 344&45
17- x- शा- 1] i- 193
18- ogh
19- ogh
20- शा- शा- i- 89] xk- शा- 1] i- 193
21- ogh
22- ogh
23- ogh
24- xk- शा- 1] i- 193
25- शा- शा- i- 90 x- शा- 1] i- 193]
26- x- शा- 1] i- 194
27- ogh
28- ogh
29- आचारोग सूत्र 1, 7, 5, 1 टीकाकार गौडविषय विशिषटकार्यासिक
30- x- शा- 1] i- 195
31- ogh
32- ogh
33- वहीं नर्मदा के किनारे महेसर माहिषक की पहचान की जाती है।
34- x- शा- 1] i- 196
35- x- शा- 1, पृ 279 शा- शा- i-136
36- x- शा- 1] i- 280, शा- शा- i- 137
37- ogh
38- शा- शा- 1] i- 280&81
39- x- शा- 1] i- 281, शा- शा- 136
40- ogh
41- x- शा- 1] i- 247
42- lHkkio 45] 19
43- lHkkio 47] 11

44- lHkkio 47] 22
45- lHkkio 47] 23
46- शोफ, द पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी 39, 6
47- lyuh] upjy fgLVh 12] 31] 34] 145(
48- tkrd ¼493½ 4] i] 352
49- LVkbu] vku vyDtml VdV bMl i- 89
50- egkHkkjr 2] 48] 17
51- शोफ, द पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी पृ- 46
52- dudlHkkb fn rkfeyl ,VVhu VMm;l ,xk i- 45
53- bfMdk 16
54- ft ;kxkQh 15] 1] 71(